प्रधानमंत्री मोदी बोले-बुंदेलखंड के किले देश की धरोहर

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा-महमूद गजनवी कई हमले के बाद भी न जीत पाया बुंदेलखण्ड का कालिंजर का किला

मन की बात

- प्रधान मंत्री बोले-इन किलों की यात्रा सभी लोग जरूर करें
- अपने इतिहास को जानें और गर्व का अनुभव करें

कालिंजर किले का प्रवेश द्वार बस देखते ही बनता है।

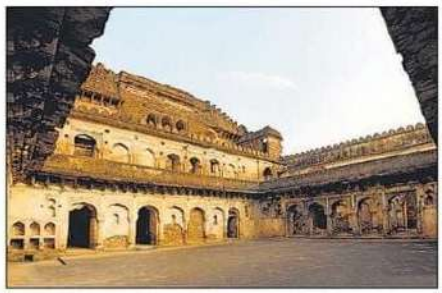

कालिंजर दुर्ग के अन्दर रानी महल का विहंगम दृश्य हर किसी को अपनी ओर खींचता है।

नरैनी (बांदा), संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार मन की बात के 124वें संस्करण में बुंदेलखंड के किलों का खूब जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बांदा स्थित कालिंजर किला जीतने के लिए आक्रांता महमूद गजनवी ने कई बार हमले किए पर वह जीत नहीं पाया।बोले, बुंदेलखंड के किले देश की धरोहर हैं, यहां अवश्य घूमने जाएं।

प्रधानमंत्री ने अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में बुंदेलखंड क्षेत्र की ऐतिहासिक धरोहरों की विशेष रूप से चर्चा की। जनपद बांदा के कालिंजर किले का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह किला भारतीय इतिहास का गौरवशाली अध्याय है। महमूद गजनवी जैसे आक्रांताओं ने इस किले पर कई बार हमला किया। हर बार उसे असफलता ही हाथ लगी। बुंदेलखंड में ऐसे अनेक किले हैं, जोकि हमारी संस्कृति, शौर्य और आत्मगौरव के प्रतीक हैं।ग्वालियर, झांसी, दतिया, अजयगढ़, गढ़कुंडार और चंदेरी जैसे किलों की दीवारें न सिर्फ स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण हैं, बल्कि भारतीय स्वाभिमान की जीवंत गाथाएंहैं।उन्होंने कहा किइन किलों की यात्रा जरूर करें। अपने इतिहास को जानें और गर्व का अनुभव करें।

किले ईंट और पत्थरों का ढांचा नहीं, संस्कृति की पहचान: प्रधानमंत्री ने कहा कि बुंदेलखंड के किले केवल ईंट और पत्थरों के ढांचे नहीं हैं, बल्कि संस्कार, स्वाभिमान और संस्कृति की पहचान हैं। आज भी अपनी ऊंची-ऊंची दीवारों से हमें प्रेरणा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत की विरासत को जानना और भावी पीढ़ियों तक पहुंचाना हम सभी का कर्तव्य है। प्रधानमंत्री ने पर्यटन, संस्कृति, और इतिहास के प्रति जागरूकता को बढ़ाने, भारत की समृद्धविरासत को आत्मसात करने पर बल दिया।

प्रमुख विशेषताएं

1. किले मे सीता सेज नामक एक छोटी सी गुफा है, जहां एक पत्थर का पलंग और तकिया रखा हुआ है।
2. लोकमत इसे रामायण की सीता की विश्रामस्थली मानता है। यहीं एक कुण्ड है जो सीताकुण्ड कहलाता है।
3. किले के पश्चिमी भाग में कालिंजर के अधिष्ठाता देवता नीलकण्ठ महादेव का एक प्राचीन मन्दिर भी स्थापित है।
4. इस मन्दिर को जाने के लिए दो द्वार हैं। रास्ते मे गुफाएं तथा चट्टानों को काटकर शिल्पाकृतियां बनाई गई है।

ऐसे पहुंचें

बस मार्ग : बांदा जनपद मुख्यालय से 33 किलोमीटर की दूरी पर है। बस से गिरवां, नरैनी होते हुए कालिंजर पहुंचा जा सकता है। विश्व धरोहर खजुराहो से 105, जनपद चित्रकूट से 78 और इलाहाबाद से 204 किलोमीटर की दूरी पर है।

रेल मार्ग : रेलमार्ग से कालिंजर पहुंचने के लिए अतर्रा रेलवे स्टेशन है, जोकि झांसी-बांदा- इलाहाबाद रेल लाइन पर पड़ता है। यहां से कालिंजर किला 36 किमी व बांदा रेलवे स्टेशन से 57 किमी है

वायु मार्ग : वायुमार्ग से आने के लिये कालिंजर से 103 किलोमीटर दूर खजुराहो तक सेवाएं उपलब्ध हैं।

एक नजर में कालिंजर किला

20	हजार वर्ष पुरानी शैलचित्र कोटि तीर्थ के निकट है, जिसमें प्रभुराम के कालिंजर आगमन का जिक्र है	07	दरवाजे प्रवेश के लिए हैं। सभी एक-दूसरे से भिन्न शैलियों से अलंकृत हैं।
07	सौ फीट की ऊंचाई पर विंध्याचल की पहाड़ी पर स्थित है। किले की कुल ऊंचाई 108 फीट है।	22	मई 1545 को हुए हमलों में से एक के दौरान शेरशाह गंभीर रूप से घायल हो गया था

कालिंजर किला शेरशाह सूरी के अंत का गवाह

कालिंजर किला मुगल बादशाह शेरशाह सूरी के अंत का गवाह है। वर्ष 1544 में शेरशाह ने उत्तरी भारत पर प्रभुत्व के अभियान के तहत कालिंजर की घेराबंदी की। किले की रक्षा राजा कर्ण सिंह ने की । शेरशाह ने कई रणनीतियां अपनाई जिनमें किले की दीवारों को तोड़ने के लिए नाकाबंदी और बमबारी शामिल थी। 22 मई 1545 को शेरशाह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके पास एक गोला फट गया था। गंभीर रूप से झुलसने से उसका अंत हो गया।

कालिंजर किले का नीलकंठ मन्दिर, जहां स्थापित शिवलिंग का अभिषेक निरंतर प्राकृतिक तरीके से होता रहता है।